स्वाध्याय

नाम : अजना गावकर

कक्षा : एम.ए.द्वितीय वर्ष

आसान क्र. : 04

पेपर : HNO - (218) हिन्दी प्रदेशों में भ्रमण

विषय : बनारस एक अविस्मरणीय सफर

भ्रमण मनुष्य जीवन का एक अभिन्न अंग है । एक ही स्थान पर बहुत समय तक रहने से हम उबल जाते है, नए-नए स्थानों पर जाने की इच्छा होती है । जब हम नए-नए स्थानों पर जाने की इच्छा होती है । जब हम नए-नए स्थानों पर जाते हैं, तो वहाँ विविध वस्तुओं से परिचित होते है । हम जीवन में केवल पुस्तकों से ही नहीं, अपितु अन्य भी बहुत से माध्यम है । जिनसे हैं । उन्हीं माध्यमों में भ्रमण भी शिक्षा का एक अच्छा माध्यम है । जिनसे - जिन जगहों पर हम जाते हैं, वहाँ- वहाँ के लोगों की सस्कृति, परम्पराएं, खानपान, वेशभूषा, रहन-सहन, आदि का पता चलता है । अलग-अलग प्रकार के शिष्टाचारों का ज्ञान होता है । भ्रमण मे विभिन्न स्वभाव वाले मनुष्यों से मिलन होता है, उनके व्यवहारों को देखकर हम बहुत कुछ सीखते हैं । भ्रमण से सृष्टि की विविधता का बोध होता है । विविध वनस्पतियों, नदी, पर्वत, झील, मन्दिर, महल, इत्यादि वस्तुओं को देखकर मन नवीनता का अनुभव करता है । भ्रमण से वर्तमान की सामाजिक परिस्थितयों का ही नहीं, किन्तु विविध ऐतिहासिक स्थलों को देखकर हम पुरानी सभ्यता कला, सस्कृति एवं परम्पराओं के बारे मे ज्ञान प्राप्त करते हैं । भ्रमण में हमें विभिन्न परिस्थितियाँ प्राप्त होती है । संग में यात्रा हो तो उसका भी अलग ही अनुभव होता है ।

महत्व: भ्रमण व्दारा इतने अधिक लाभ होते है कि उन सभी का आसानी से वर्णन नहीं कर सकता । अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक बेकन ने कहा है कि युवा वर्ग के लिए भ्रमण शिक्षा का अंग है, जबकि बड़े लोगों को इसका अनुभव मिलता है । भ्रमण से जो हम सीखते है । क्योंकि सीखने में ऑख की भूमिका अन्य ज्ञानेन्दियोंको की तुलना में सबसे अधिक होती है ।

1) ज्ञान की वृद्धि: भ्रमण हमारे किताबी ज्ञान में वृद्धि करता है । भ्रमण के सहारे इतिहास हमें वास्तविक दिखता है तथा समूचा भूगोल साकार हो उठता है । इससे अर्थशास्त्र के सिद्धांतों की परीक्षा हो जाती है और नई चुनौतियां उभर आती हैं ।समाजशास्त्र की नींव मजबूत हो जाती है । ऐतिहासिक महत्व के स्थानों के भ्रमण से पुस्तकों में पढी धुंधली छवि प्रकाशित होकर साकार हो जाती है ।

2) संसार के व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति: भ्रम संसार के व्यावहारिक ज्ञान को प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है । प्रसिद्ध कवि पोप ने ठीक ही कहा है कि मानवता का सही अध्ययन मनुष्यों के अध्ययन से ही हो सकता है । भ्रमण के व्दौरान तरह तरह के व्यक्तियों से हमारा संपर्क होता है । यदि हम चौंकनी निगाह रखकर भ्रमण करें और अपने दिल और दिमाग के खिडकी और दरवाजे सभी खुले रखे तो हमें भ्रमण के संसार के व्यक्तियों और घटनाओं का इतना व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हो जायेगा जो किसी पुस्तक में नहीं मिल सकता ।

3) स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य : मस्तिष्क के स्वस्थ विकास के लिए भी भ्रमण अति आवश्यक है ।

4) दृष्टिकोण विस्तृत होता है : भ्रमण से हमारा दृष्टिकोण विस्तृत होता है । इससे हमारे विचारों और दृष्टिकोण में उदारता आती है । इसके व्दारा हमारे मन में मानवता के प्रति सहानुभूति जागृत होती है । विविध प्रकार का अनुभव पाकर हम घटनाओं और वस्तुओं को एक नई दिशा से देखना सिख जाते है । इससे मूल्यों के प्रति हमारा सही दृष्टिकोण विकसित होता है ।

इस साल जून में हमारा III -IV सेमेस्टर के लिए फिर से विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में हमारा दाखिला हो गया था क्लासीस शुरू हो गई थी । और इस साल के पाठ्यक्रम हमें कम था । 84 क्रेडिट में से कम होकर 64 क्रेडिट हो गया था । और इस साल के पाठ्यक्रम में भ्रमण पेपर भी शामिल किया गया था और यह बात हमारी विभागाध्यक्षा डॉ. वृषाली मान्देकर जी ने हमें बताया । तब हम सब ने भ्रमण पेपर लेने के बारे में सोचा । क्योंकि हम सब जानते थे कि यह पेपर टूर का था । यह जानकर सबके चेहरे पर खुशी छ: गई । और इसके लिए क्लासीस भी नहीं होगी, सीधा टूर । हम सब ने फैसला किया कि भ्रमण पेपर ही लेंगे । और इसके बारे में मिस से बातचीत की और यह पेपर फायनल कर दिया ।कभी-कभी क्लास में लेक्चर के बीच इस पे

पर की बात छेड़ी दी जाती थी । कभी-कभार मौसम के कारण, तो कभी टिकट के कारण बात आगे न बढ पाती थी । पर 17 फेब्रुवरी को टिकट मिल ही गई थी । तब तो हमारा खुशी का ठिकाना ही नहीं रह गया था । जल्दी से ISA खत्म की और टूर की तैयारी के लिए लग गए ।

हम लोगों का गोवा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से 7 से 17 फेब्रुवरी तक उत्तरप्रदेश में वाराणसी में कुछ जिलों में शैक्षणिक भ्रमण हुआ । भ्रमण में विभागाध्यक्ष डॉ.वृषाली माद्रेकर जी सहायक प्रो.दिपक वरक एवं मॅगडालीन मीस सम्मिलित थे । कुल यात्रियों की संख्या 50 की थी । उस यात्रा से संबन्धित कुछ जानकारियाँ और अनुभव आपके समक्ष प्रस्तुत है ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय :

हमारे भ्रमण में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को देखने का कार्यक्रम भी रखा हुआ था । बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है । इसे संक्षेप में बी. एच. यू. (BHU) भी कहॉ जाता है । यह उत्तरप्रदेश में वाराणसी में हैं । इसकी स्थापना 4 जनवरी 1916 में की थी । इस विश्वविद्यालय के परिसर के भीतर अलग - अलग संकाय हैं । इसमें एक महिला कालेज, इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, कृषि संकाय भी शामिल हैं । विश्वविद्यालय में छह विषयों के एडवांस्ड स्टडी सेंटर भी है । सर्वप्रथम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में प्रवेश किया तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा था । हर एक विभाग का अपना एक प्रारूप था । हम हिन्दी विभाग में गये । वहाँ के प्रोफेसर डॉ सदानंद शाही ने हमारा स्वागत किया और प्रेमचंद जी के ईदगाह कहानी की चर्चा की ।

Sayajira Gaekwad Library :

हमने अपने विश्वविद्यालय का ग्रंथालय तो देखा था क्योंकि वह हमारे विश्वविद्यालय का हिस्सा था । जब हम बनारस में ग्रंथालय में ले जाया गया था तब हम । सब बहत खुश थे । क्योंकि हमें वहाँ का ग्रंथालय देखना था । वहाँ और कौनसी किताबें होगी । जब हम अंदर गये । तब पता चला वहाँ का ग्रंथालय बहत ही बडा था । वहाँ का काउंटर बैठने की व्यवस्था कुछ अलग ही थी ।

अस्सी घाट :

बनारस के काशी में अस्सी घाट के बारे में सुना तो बहुत कुछ था । वहाँ के सम्बन्ध में लोगों की आस्थाएं, गंगा स्नान के बारे में लोगों की धारणाएं, गंगा का पवित्र रिश्ता, वहाँ का पवित्र गंगा जल और नजाने क्या क्या । जब हम गंगा घाट पर गए तब एक नॉव किनारे पर खडी थी और हम सब एक एक करके नाव में चढ गये । और हम सब एक ही नाँव पर बैठे गये और नाँव शुरू हो गई थी ।और तब बढा हमारा उत्साह । हम सब जोर जोर से चिल्ला उठे । अपने मोबाइल पर सेल्फी और फोटो निकालकर कुछ यादें अपने मोबाइल पर कैद कर ली ताकि फिर कभी मन किया तो मोबाइल खोलकर फिर से देख लूँ । तभी इसी बीच उस नाँव पर एक महाशय ने इस गंगा घाट से जुड़ी कुछ कहानियां बयान कर दि । तो किसी सहपाठी ने अपने घर में विडियो फोन करके अपने घरवालों को/ बुजुर्गों को वहाँ का नजारा देखाकर उनकी तृष्णा पूरी कर दि । इसके बीच समय का पता भी नहीं चला कि रात की 7.30 के बीच की आरती शुरू हुई । तभी वहाँ एक छोटा बच्चा शायद 10 या 11 साल का था । उसके पास एक थाली थी । और उस थाली में बहत सारे दियें थे । सब ने खरीदना शुरू कर दिया । और मैंने भी एक ले लिया । 10 रूपये का एक दिया था । आरती जोर जोर से चल रही थी और हम बड़े उत्साह से देख रहे थे । रात होने के कारण दियों के कारण वहाँ का नजारा बडा ही खुबसूरत एवं रोमांचक लग रहा था । हमने अपना मोबाइल लेकर थोड़े विडियो शूट किये ताकि बाद में घरवालों को दिखा सके । आरती होने के कारण वहाँ की घंटीयो की आवाजें बड़े जोर-शोर से आ रही थी । इसके मकारण आरती के गीत स्पष्ट नहीं हो पा रहे थे। आरती के दौरान मैंने अपना दिया जलायाऔर आरती खत्म होने का इन्तजार कर रहे थे पर आरती लम्बी होने के कारण खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थी । पर मेरा दिया बुझने की कगार पर था । दिया बूझ न जायें, इसलिए मैंने पहले ही नदि में छोड़ दिया । और छोडते समय अपनी वीश मांग ली । कहते हैं कि अगर दिया

जलाकर गंगा नदी में छोड़ देने से मन की इच्छा पूरी हो जाती है । इस आस्था के चलते मैंने भी माँगी । और बाद मे आरती खत्म होते ही सबने अपना अपना दिया नदि में छोड़ दिया । इस गंगा नदी की अच्छी अच्छी बातें सुनी थी और और देख भी लि । पर इसकी नकारात्मक बाते बातें भी बहुत सामने आयी और देखी भी । जहाँ तक नदि पवित्र मानी जाती हैं वह आज सबसे अधिक दूषित हो गई है । जहाँ देखो वहाँ कचरा दिखाई दे रहा है और जहाँ हम दिया जलाकर नदि में छोड़ दिया करते हैं । इसके कारण इस आस्था के कारण हर दिन आरती के नाम पर होने वाले जो फूल और आरती के नाम पर होने वाली गंदगी । और एक बात जानने को मिली कि इस गंगा नदी के तट पर शव को जलाया जाता है और आधे जलाकर नदि में छोड़ दिया है । इस गंगा किनारे कितने ही अनगिनत कहानियाँ है कुछ मस्जिद की कहानियाँ, कुछ मंदिरों की कहानियाँ, शिव पार्वती की कहानी, नजाने ऐसे कितने कहानी छुपी है इस गंगा के तट पर । इस गंगा के तट पर प्रसाद के नाम पर बाजारवाद देखने को मिलता है । पण्डित गंगा तट पर प्रसाद के नाम पर पैसा कमाने का धंधा करते दिखाई देते है ।

Buddhist monastery sarnath :

जब हम बुद्ध की इतनी बड़ी मूर्ति देखा तो मन पर विश्वास ही नहीं हो रहा था । इस बडी मूर्ति के नीचे छोटी मूर्तियाँ भी थी और वह भी बहुत ही सुन्दर लग रही थी । वहाँ का नजारा मन को हरने वाला था । वहाँ की बुध्दा की मूर्तियाँ, फूलों का बगीचा, बीच में पानी का तालाब । जब अंदर, प्रवेश किया जाता है , तब व्दार से अंदर जाना पडता है । तब अंदर जाते समय यह नजारा बडा ही खुबसूरत एवं रोमांचक लग रहा था ।

बनारसी साडी बनाने का कारखाना :

बनारस, बनारसी साड़ी के लिए मुख्य रूप से जाना जाता है । इस कारखाने में हमें भी ले जाया गया । वहाँ का प्रारूप देखने को मिला । वहाँ कोई मशीन नहीं था । वहाँ हर एक काम इन्सान करता था छोटे से बडे काम तक । यानी छोटे धागे की बुनाई तक से साडी की पूरी बनने की प्रक्रिया तक । इसीलिए बनारसी साड़ी की खास बात है ।

मुंशी प्रेमचंद जी का घर लमही :

हमें पता चला कि हम प्रेमचंद जी के घर जाने वाले है तो बडी खुशी हुई । क्योंकि प्रेमचंद जी को कथा सम्राट कहा जाता है और जितने भी उन्होंने कथा / कहानियाँ लिखे गये थे वे उन्होंने अपने गाँव से ही लिखे थे । अब तक हमने प्रेमचंद जी को सिर्फ किताबों से - जाना था । और अब उसके घर जाने का अवसर प्राप्त हो गया था । इसलिए हम बहत ही खुश थे । जब हम प्रेमचंद जी के घर में गये तो बहत ही अच्छा लगा । वहाँ प्रेमचंद जी के घर के बाहर यानी उसके घर में प्रवेश करते ही । प्रेमचंद जी की मूर्ति प्रतिष्ठित की गयी थी । वहाँ प्रेमचंद जी के घर में एक महाशय श्री दुबे जी ने प्रेमचंद जी के बारे मे थोड़ी बात की । प्रेमचंद जी के घर में उसकी हर एक चीज संभालकर रखी हुई है ।

प्रेमचंद का प्रिय त्योहार
होली

"सुहाग की साड़ी" - प्रेमचंद
विलायती (विदेशी) चिजों का बहिस्कार पर लिखी
प्रेमचंद की चर्चित कहानी.

२०१३ बंगलूर
WITH LOVE FROM
BISHOP COTTON WOMEN'S CHRISTION COLLAGE
BANGALORE

"सुहाग का शव"
नारी समस्या पर लिखी
कहानी

" इसी बीच आँगन था और किनारे- किनारे समीप परिवार था । यहाँ पर महान साहित्यकार इसी जगह पैदा हुआ । यहाँ पर उनकी मूर्ति लगी हुई थी । सच तो यह है कि आज से सवॉ साल पहले यहाँ एक महान व्यक्ति नवाब का जन्म हुआ । वे आगे चलकर एक प्रेमचंद के नाम से जाने लगे । इसी जगह से प्रेमचंद जी देश की आजादी से लेकर समाज की आजादी तक की संकल्प लेकर इन्होंने रचनाएँ शुरू किया । हमारा भारत वर्ष का गाँव है । हमारे भारत की आत्मा गाँव में बसती हैं । प्रेमचंद जी गाँव में पैदा हुए । यहाँ के शोषण, अन्याय, अत्याचार, अंधविश्वास को देखा झेला । सोचा की ये अगर भारत की स्थिति हैतो भारत में ऐसे बहत जगह ठीक नहीं है । इसी समय बीसवीं समय का दौर भारत के लिए चुनौती भरा दौर था । ऐसे ही समय में हमारे प्रेमचंद जी चुनौतियों पैदा हुए । चुनौतियों पलें, चुनौतियों मर गए । आज हमारे सामने स्मृतियाँ छोडकर चले गए । जिस समय वह पैदा हुए थे उस समय कौनसी चुनौती थी ।सच्चाई यह है कि एक रूढ़ि लेकर पैदा हुए, एक तीसरा पैदा हो गई । कहते हैं कि तीन लडकियों के बाद पैदा होने वाला बालक महाशिवरात्रि मारा जाता है । यानी तो उनकी माँ मारेगी या बाप मरेगा, या तो उनका सत्यानाश होगा । लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ । प्रेमचंद जी सम्राट की उपाधि पाये । और सत्यानाश हुआ उस अंधविश्वास का, मुंशी प्रेमचंद जी मानस पटल में सम्राट की उपाधि पायी गई ।

दुसरी चुनौती उनके सामने थी कि दो साल की गुलामी अंग्रेजों से झेल रहे थे । लोग सोच रहे थे कि हम कभी आजाद नहीं हो सकते । समय बदला, परिस्थिति बदली, देश के महापुरुषों ने वह स्वराज्य का मसाल लेके निकल पड़े । तब प्रेमचंद जी कलम का सिपाही बनकर सामने आये । यही से लेकर उन्होंने देश की आजादी से लेकर समाज तक का संकल्प लेकर रचनाएँ लिखी । देश के लिए आजादी को लेकर 'सोजे वतन ' यह पाँच कहानियों का संग्रह है । जिससे दुनिया का अनमोल रतन में कहाँ यही मेरा वतन है जो इसका पूरे देश में हुआ । पहली ही कहानी की पंक्ति ने अंग्रेजों की कलायें बदलकर दिशायें बदली जो खून की वह आगे कतरा वो वतन के हिफाजत गिरे जो वही दुनिया का सबसे दुनिया का अनमोल चिज है । तो अंग्रोजों को लगा जो क्रांतिकारी किताब है । उन्होंने जप्त करके अपने हवाले कर दिया । आज तक का कोई साहित्यकार नहीं हुआ । जो देश के आजादी के लिए चिंता प्रताडें का कार्य जो लमही से कलम सिपाही प्रेमचंद जी थे । प्रेमचंद जी ने देखा कि जो यह देश आजाद होने से कोई रोक नहीं सकता । प्रेमचंद जी ने यही से 15 उउपन्यास 400 कहानियाँ -गोदान, गबन, रंगभूमि, कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, कायाकल्प प्रदान, सेवा सदन आदि । मंगल सूत्र अधूरी रह गई । प्रेमचंद जी की मौत 8 अक्तूबर 1936 को अलविदा हो गए । समय की थपेडों ने प्रेमचंद जी कहानीकार बने ।

बचपन में माँ चली गयी । 13 -14 तक पहुँचते- पहुँचते पिताजी ने भी साथ छोड़ दिया । प्रेमचंद जी ने नारी समस्या, जहाँ से आज तमाम चर्चायें हो रही है । नारी सशक्तीकरण बेटी बचाओ बेटी पढाओं इस ज्ञान का सौ साल पहले इसका अभियान छेड़कर निर्मला लिखा था । जहाँ की दहेज का दानव निर्मला की जिंदगी निकल गई और बिचारी समझ हिन्दी नहीं पायी कि ससुराल क्या होता है । पति क्या होता है । सूख क्या होता है । अपनी जिंदगी का जंग लड़ते लड़ते हार गईं । मर गई । ऐसे

कहानी को प्रेमचंद जी ने आखों से देखा। कफन कहानी भी यहाँ लिखी गई । प्रेमचंद जी ने ऐसे पहलुओं को छुआ, कुछ कहानी अपने मन से, घर से, गाँव से, जहाँ जहाँ जाते रहे वहाँ वहाँ कहानियाँ लिखते रहें । "

सद्गुरु कबीर धाम : Sadguru Kabir Prakajaye Dham

जिस तरह से प्रेमचंद जी गाँव जाने का मौका मिला था । वैसे ही कबीर के जन्मास्थली में जाने का मौका मिला । कबीर को हमने पढ़ा था । कबीर के दोहे में हमने कबीर को जाना था । कबीर अपने युग के सबसे महान समाज सुधारक प्रतिभा संपन्न एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे । वे अनेक प्रकार के विरोधी संस्कारों में पलें थे । और वे किसी भी बाह्य आडम्बर, कर्मकाण्ड और पूजा पाठ के विरोधी थे । और वे सादे जिवन को अधिक महत्व देते थे ।

सत्य, अहिंसा, दया तथा संयम से युक्त धर्म के सामान्य स्वरूप में ही विश्वास करते हैं । यह धारणा मन में लेकर हम लहरतारा में आयें । तो हम कबीर के घर को देखकर चकित हो गए । कबीर मूर्ति पूजा आदि को विरोध करते थे । तो उसको ही कबीर धाम में भगवान बना दिया है । जहाँ तक हमने जाना था कि कबीर ने एक झोपड़ी में जीवन बिताया था । तो उसका आज बडा महल बनाया है ।

durga mandir - durgakund varan

इस यात्रा के दौरान हमे मॉ दूर्गा के व्दार पर जाने का अवसर मिला ।हिन्दू धर्म सस्कृति के अनुसार भगवान से जुड़ी बहुत सारे आस्थाएं बनी है । वे भगवान को पुजते है । मंदिर में जाने के बाद माँ का दर्शन होने के बाद मन प्रसन्न हुआ ।

भारत कला भवन :

इस यात्रा के दौरान हमे 'भारत कला भवन' जाने का मौका मिला । जब हमने भारत कला भवन में अंदर लिया गया और पुरखों से चली आ रही हर चिज

खजाने की तरह संभालकर रखी गई हुईं थीं । भगवान की मूर्तियों से लेकर राजा महाराजा के कपड़े तक । पुराने पैसे संभालकर रखे गए थे । नजाने क्या क्या । इसके साथ साथ नृत्य के चित्र अपनी सभ्यता और संस्कृति का भरमार हमें यहाँ देखने को मिला ।

शी काशी विश्वनाथ मंदिर :

कहते हैं कि अगर काशी आकर विश्वनाथ मंदिर का दर्शन नहीं हुआ तो यह यात्रा अधूरी मानी जाती है । हमें बड़े सौभाग्य से काशी विश्वनाथ मंदिर में जाने का मौका मिला । यह मंदिर भगवान शिव का प्रसिद्ध मंदिर हैं । यह विश्वनाथ मंदिर हिन्दू धर्म मे विशिष्ट स्थान है । इस मंदिर में शिव लिंग को प्रतिष्ठित किया गया है । हम सब लड़कियाँ साडी पहनकर मंदिर में दर्शन करने गये थे । क्योंकि लड़कियाँ अंदर सिर्फ साडी पहनकर ही मंदिर में जा सकते है । ऐ सा हमें पता चला था । यह बात सच थी पर यह सिर्फ सुबह की आरती के लिए ही । हमने अंदर जाकर शिव लिंग के दर्शन किये और नंदी के कान में मेरी मन्नत माँग ली ।

रामनगर किल्ला : ramnagar fort :

किल्ला हम देखने के लिए गए थे । इस किल्ले में तोप रखी हुई थी ।

बोधगया

बिहार में हम बुद्धा की मूर्ति देखने हमें ले जाया गया । यह बिहार की सबसे प्रसिद्ध मूर्ति थी । और इन्ही के आस पास बुद्धा की मंदिर भी है ।

और उसके आसपास देखें तो एक अलग ही अंदाज है । बाहर बच्चें शिक्षा प्राप्त करने दिखाई दे देते है । तो थोडे लोग बाहर वायलिन बजाते दिखाई दे रहे थे । तो थोडे बुद्धाके भक्त आराधना करते दिखाई देते थे ।

राम जानकी मंदिर

जगन्नाथ मंदिर

हमें राम - जानकी एवं जगन्नाथ मंदिर ले जाया गया ।

नालंदा विश्वविद्यालय

दुनिया की सबसे पहली अंतराष्ट्रीय विश्वविद्यालय है नालंदा विश्वविद्यालय । इसका इतिहास प्राचीन एवं व्यापक है । यह बिहार राज्य में स्थित है । इस नालंदा विश्वविद्यालय में गये तब वहाँ के एक महाशय ने बताया कि "यह पहला residential international University था । दुनिया का पहला अंतराष्ट्रीय विश्वविद्यालय था । नालन्दा विश्वविद्यालय को तीन राजाओं ने

मिलकर बनाया था । पहला राजा कुमार गुप्त बना था । जो मगध के राजा थे । और मगध की राजधानी राजगीरा थी । मगध बहत बडा साम्राज्य था । तो उसका पहला राजा कुमार गुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना 5 वीं सदी में की । दूसरे है राजा हर्षवर्धन, जो कनौजिया के राजा थे । वे 7 वीं शताब्दी में आयें । तीसरे थे देवपाल राजा जो बंगाल के राजा थे । विश्वविद्यालय में 10,000 विद्यार्थी थे और 15,000 शिक्षक थे ।

इसका परिसर सुनिश्चित ढंग से विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ है । यह विश्वविद्यालय स्थापत्यकला खा अद्भुत नमूना था । इसका पूरा परिसर एक विशाल दिवार में घिरा हुआ था । जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य व्दार था ..."

सस्कृति और विरासत :

- भारत में हिन्दु धर्म और सभ्यता के केंद्र के रूप में काशी यानी वाराणसी का विशेष महत्व है । बनारस की कई विशेषताएं हैं एवं इसके कही नाम हैं जो इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी बनाता है ।
- पुरातत्व, पौराणिक कथाओं, भूगोल, संस्कृति अध्यात्म, कला, वाराणसी का इतिहास, उत्तरवाहिनी गंगा पर अपनी अनूठी स्थिति, भारत के इतिहास के माध्यम से इसकी यात्रा, भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसी यह नगरी आदि विशेषताएं इसे सबसे पुराना जीवित शहर का महत्व प्रदान करता है ।
- **धार्मिक वाराणसी** - वाराणसी कई धर्म, स्थान एवं पूजन पद्धतियों के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान और संस्थान के लिए जाना जाता है । आप

पायेंगे इस शहर में अभी भी विभिन्न सम्प्रदायों के प्राचीन उपासना पद्धतियों का प्रचलन है । यह बुद्ध, जैन तिर्थंकर शैव और वैष्णव संतों या कबीर और तुलसी जैसे पवित्र संतों की कर्मस्थली रहीं हैं ।

- **बनारस की कला,शिल्प और वास्तुकला:** यह दर्शनिय है कि वाराणसी एक वास्तुशिल्प का पूर्ण संग्रहालय है । इस इतिहास के दौरान बदलते पैटर्न और आंदोलनोंको प्रस्तुत करता है । इसमें पेटिंग और मूर्तिकार शैलियों की समृद्ध और मूल प्रकार और लोक कला के समान समृद्ध खजाने है । वार्शान्तर में वाराणसी ने मास्टर कारीगरों का निर्माण किया है और वाराणसी ने अपने साडी, हस्तशिल्प, वस्त्र, खिलौने, गहने धातु के काम, मिट्टी और लकड़ी का काम, पत्ती और फाइबर शिल्प के लिए नाम और प्रसिद्धि अर्जित की है । प्राचीन शिल्प के साथ बनारस आधुनिक उद्योगों में भी पीछे नहीं रहे हैं ।

- **गंगा- पवित्र नदी में भी सर्वाधिक पवित्र** - इसकी पौराणिक कथाएं भूगोल, सामाजिक - आर्थिक पहलुओं, इसकी विशाल घाट, विभिन्न कथाएं, किंवदंतियाँ और प्रदूषण की वर्तमान स्थिति ।

- सर्व विद्या, सर्व ज्ञान की राजधानी , भारत में शिक्षा के प्राचीनतम केंद्र, विश्व प्रसिद्ध विद्वानों और उनके 'शास्त्रार्थों ' महान विद्वानों, विश्वविद्यालयों, कालेज, स्कूलों, मदरसों, पाठशालाओं और गुरू शिष्य, परंपराएं, महाकाव्यों, प्रसिद्ध साहित्यिक कार्य, भाषाओं और बोलियों पत्रकारिता परंपराएं समाचार पत्र और पत्रिका, और प्रसिद्ध पुस्तकालय, यह सभी वाराणसी की विशिष्टयां है ।

- **सामाजिक और सांस्कृतिक विवरण -** पवित्र, प्रमुख और सामाजिक स्थानों की संस्था, सांस्कृतिक बहुलतावादी, भाषाई और जातीय समूहों । समृध्दि बुध्दिजीवियों, मौखिक परंपराओं, जातीय और रीतिरिवाजों,

व्यक्तित्वों, व्यवसायों, सांप्रदायिक सौहार्द को यहाँ एक सूत्र में समाहित किया जाता है । ग्रामीण वाराणसी की खोज करें और अंत में (और गहरी अंतर्दृष्टि के साथ) बनारसी पान, ठंडाई, कचौडी, लस्सी, स्वादिष्ट मिठाईयाँ, विशिष्ट अलंग और मौज मस्ती की खुशी यहाँ प्राप्त होती है ।

- **संगीत, कला, नाटक और मनोरंजन का शहर :** बनारस अपनी संगीत परंपरा गायन और वादन दोनों के लिए और ख्यातिलब संगीतकारों के लिए मशहूर रहा है । बनारस घराने की अपनी खुद की नृत्य एवं गीत परंपरा है । इसे लोक संगीत और नाटक (विशेष रामलीला) का एक बहुत समृद्ध भंण्डार है । संगीत समारोहों, मेलों और त्योहारों तथा अखाड़ों एवं खेल की समृद्ध परंपरा से परिपूर्ण है ।

- **औद्योगिक शहर :** भारी, हल्के और कुटिल उद्योगों, स्थानीय हस्तशिल्प, पर्यटन और अन्य छोटे पैमाने पर औद्योगिक इकाइयों के तेजी से विकासशील शहर की दिशा में अग्रसर है । (डिएलडब्लू भेल इलेक्ट्रिक, साइकिल, पंप्स, पेपर, ग्लास, उर्वरक आदि ।)

- **वाराणसी एवं चिकित्सकीय परंपरा :** प्लास्टिक सर्जरी, सुश्रुत, धन्वंतरी (देव चिकित्सा के देवता), दिवोदास के प्राचीन आयुर्वेदिक ज्ञान भंण्डार का केंद्र रहा है, वर्तमान में सभी प्राचीन और आधुनिक चिकित्सा प्रणालियों के संस्थान यहाँ उपलब्ध है ।

- **अगोचर बनारस** : वाराणसी के आस पास के स्थानों, संस्थानों, स्वतंत्रता संग्राम और शहीदों की कहानी, काशीराज का इतिहास, सारनाथ का इतिहास, गाजीपूर के मिर्जापूर के भेदोही (कालीन शहर) का इतिहास, प्रसिद्ध यात्रियों और 'निजाम के पर्यटक, और अंत में बनारस के पैनारेमा की अनुभूति, इसकी संस्कृति की निरंतरता, बनारस की पहचान इसे अद्भुत एवं अलौकिक महत्व प्रदान करती है ।

गली गली का खानपान

केवल भारत नहीं, दुनिया भर में मशहूर है इस शहर का खानपान । कोई गली कचौडी जलेबी के लिए प्रसिद्ध है तो कोई मलाईयों के लिए । कहीं रस मलाई तो कहीं चटपटी चाट । व्यंजनों के मामले में हर गली मोहल्ला खास हैं । पक्के महाल के चौखंभा में ' राम भण्डार ' की कचौडी का स्वाद लेने के लिए सुबह से ही ग्राहकों की कतार लगती है । इसके अलावा कचौडी गली में राजबंधु की प्रसिद्ध मिठाई की दुकान में काजु की बर्फी, हरितालिका तीज पर केसरिया जलेबी व गोड कचौडी, ठठेरीबाजार में श्री राम भंण्डार की तिरंगी बर्फी का क्या कहने । केदारघाट के सकरी गलियों में दक्षिण भारत का स्वादिष्ट व्यंजन इडली व डोसा भी दक्षिण भारत की ही याद दिलाता है । चटपटी चाट के लिए जहाँ काशी चाट भंण्डार, अस्सी के भौकाल चाट, दीना चाट भंण्डार और मैंगा आदि काफी लोकप्रिय है, वही ठठरी बाजार की ताजी और रसभरी मिठाईयों को दुनिया भर में पसंद किया जाता है । अगर आपको दूध दही और मलाई रास आती है तो बनारस जाकर 'पहलवान की लस्सी' जरूर पाएं ।

गंगा स्नान : अटूट रिश्ता

वाराणसी का संस्कृति का गंगा नदी से अटूट रिश्ता है । एसा माना जाता है कि गंगा नदी में डुबकी लगाने से आत्मा पवित्र हो जाती है और सारे पाप धूल जाते हैं । बनारसजाकर गंगा में डुबकी लगाना बनारस की सैर से कुछ खास कामों में से एक है । बाबा भोलेनाथ की नगरी बनारस, घाट और मंदिरों के लिए जानी जाती हैं । इसलिए अगर आप बनारस गए और वहाँ के प्रमुख मंदिरों में दर्शन करने नहीं गए तो आपकी यात्रा अधूरी रह ही जायेंगी । बनारस का सबसे प्रमुख मंदिर है

'काशी विश्वनाथ मंदिर ' इसके दर्शन करने के लिए लोग दूर दूर से आते हैं । बनारस के घाट पर शाम को होने वाली गंगा आरती का नजारा वाक़ई अद्भुत होता है । शाम को बडी संख्या में लोग इस आरती को देखने के लिए इकट्ठा होते हैं ।

अलग पहचान : कोने कोने में कलाकार

संगीत की दुनिया में बनारस घराना अपनी एक पहचान रखता है । कबीरचौरा से रामपुरा तक पुराने बनारस के म इर्द -गिर्द फैले क्षेत्र में दर्शकों नहीं वरन शताब्दायों से संगीत के सूर फैलते रहे हैं । शिव की नगरी काशी के कोने कोने में रचते - बसते और जन्मते रहे हैं कलाकार । बनारस 'चार पट' गायिकी के लिए प्रसिद्ध रहा है । इस घराने के गायक धुरपद धमार ख्याल, ठुमरी व ठप्पा चारों में महारत रखते रहे हैं ।

संस्कृति को एक महान केंद्र बनाता है । हालांकि वाराणसी मुख्य रूप से हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म के साथ जुडा हुआ है, लेकिन वाराणसी में पूजा और धार्मिक संस्थाओं के कहीं धार्मिक विश्वासों की झलक पा सकते हैं । वाराणसी भारतीय कला और संस्कृति का पूरा एक संग्रहालय प्रस्तुत करता है ।